मैं महापल्ली में रहता हूँ...

मीनू पालीवाल

कक्षा-1 के बच्चे ने अपना परिचय लिखने का प्रयास किया। बच्चे ने यह परिचय अक्टूबर में लिखा था और स्कूल जुलाई से खुल जाते हैं। मतलब, लगभग 3 से 4 महीने में यह बच्चा इतना लिखना सीख गया है।

यदि बड़ों की नज़र से इस लेख में गलतियाँ खोजने की कोशिश करेंगे तो बहुत-सी गलतियाँ नज़र आने लगेंगी क्योंकि कॉपी चेक करना या आकलन करने का मतलब अक्सर गलतियाँ सुधरवाना ही समझा जाता है। परन्तु थोड़ा उदार और सृजनात्मक नज़र से इसका आकलन किया जाए तो कुछ और ही दिखेगा।

आइए, हम इसका सही मायनों में आकलन करने की कोशिश करते हैं।

इस लेखन (चित्र-1) को देखकर, बच्चा क्या-क्या जानता है, इस बारे में हम निम्न बातें कह सकते हैं:

- बच्चा इन अक्षरों म, ह, प, ल, क, क्ष, ड, झ, ख, न को लिखना जानता है।
- कुछ मात्राएँ जानता है जैसे आ, ए, ऐ, इ, उ की मात्राएँ।
- शब्दों के बीच में थोड़ी जगह छोड़ना जानता है।
- शब्दों के ऊपर एक लाइन खींचनी होती है, यह भी जानता है।
- बच्चे का 'रवेलना' में 'ख' लिखने का तरीका यह बताता है कि शिक्षक का लिखा हुआ, उसके लिए कितना महत्वपूर्ण है।
- वह यह भी जानता है कि लेखन दाएँ से बाएँ और ऊपर से नीचे किया जाता है।

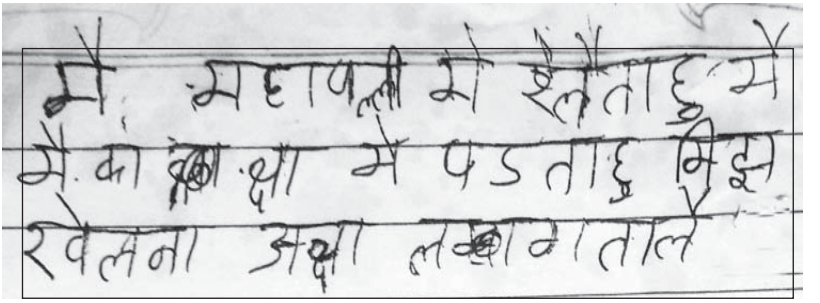

चित्र-1

आकलन का एक उद्देश्य यह जानना भी होता है कि बच्चा सीखने की प्रक्रिया में कहाँ तक पहुँचा है। आइए, इसे समझते हैं।

- बच्चे ने महापल्ली (जो आम मान्यता के अनुसार एक कठिन शब्द है क्योंकि यह शब्द न केवल 4 अक्षरों से मिलकर बना है बल्कि उसमें आधा अक्षर भी है) सही लिखा।
- बच्चे ने 'कक्षा' शब्द में 'क्ष' अक्षर इस्तेमाल किया है। यह अक्षर कम ही शब्दों में देखने को मिलता है और इसे एक कठिन अक्षर समझा जाता है।
- 'कक्षा' और 'अच्छा' शब्द बोलने में ध्वनि में कुछ समानता महसूस होती है। कक्षा-1 का बच्चा यह महसूस कर पा रहा है और इसलिए उसने 'अच्छा' को 'अक्षा' लिखा है, जो सराहनीय है। इससे यह पता चलता है कि बच्चा अपने सीखे हुए को कहीं और लागू करने की क्षमता विकसित कर रहा है।
- इस वाक्य में बच्चा 'ए' और 'ऐ' की मात्रा का सही उपयोग कर पाया है।
- "मैं महापल्ली में " और "खेलना अच्छा 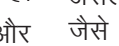", इनमें 'ह' अक्षर की बजाय 'ल' अक्षर का इस्तेमाल किया है। इससे ऐसा लग सकता है कि बच्चा 'ह' अक्षर नहीं जानता, परन्तु उसने अपने लेखन में 'ह' ('हु' में) और 'ल' ('महापल्ली') का सही इस्तेमाल किया है। इसका मतलब है कि जब बच्चे से अपना लिखा पढ़कर, उसे ठीक करने को कहा जाएगा तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि बच्चा अपनी गलती खुद ही सुधार ले।
- 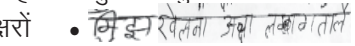 इसमें बच्चे ने 'मुझे' की बजाय 'मिझ' लिखा है। इसका मतलब यह नहीं है कि बच्चा 'ए' की मात्रा और 'उ' की मात्रा का उपयोग नहीं जानता। उसने अपने लेखन में 'इ' और 'उ' की मात्रा का उपयोग किया है।
- इसी तरह 'पढ़ता' की जगह 'पडता' लिखा है। 'ड' और 'ढ़' की ध्वनि में अन्तर कम है, इसलिए शुरुआत में यह गलती स्वाभाविक ही है।

सुधार कहाँ, क्यों और कैसे करवाएँ

1. बच्चे को स्वयं अपना लिखा पढ़ने और उसमें सुधार करने को कहा जाना चाहिए।

2. आकलन करने वाले को यह निश्चित करना चाहिए कि बच्चे ने असल में गलती की भी है या नहीं। जैसे बच्चे ने 'मुझे' की बजाय 'मिझ' लिखा है, यह गलती शायद क्षणिक है क्योंकि उसने अपने लेखन में 'इ' और 'उ' की मात्रा का कई जगह सही उपयोग किया है।

3. हमें यह बात भी समझनी चाहिए कि हम सारी त्रुटियों को सुधारने की

कोशिश तुरन्त ही न करने लग जाएँ। इससे बच्चा लिखने से कतराने लगेगा।

4. हम गलतियों का पैटर्न देखकर, उनको सुधारने का तरीका ढूँढ़ें।

इस लेखन में केवल एक ही जगह सुधार करवाने की ज़रूरत दिख रही है। तीन जगह एक ही किस्म की गलती है, यहाँ हम एक पैटर्न देख रहे हैं।

रहताहूँ, पढ़ताहूँ, लगताहै – इनमें एक पैटर्न बनता है। बच्चा दो शब्दों को मिला रहा है, वो भी वाक्य के अन्त के दो शब्दों को। इसे सुधारने के वैकल्पिक तरीके हमें सोचने होंगे।

कैसे सुधारी जाएँ गलतियाँ?

बच्चे से सीधे-सीधे यह कहना कि “दो शब्दों को एक साथ क्यों लिखा है, इन्हें अलग-अलग करके लिखो,” शायद गलत होगा क्योंकि इसमें बच्चे के लिए सोचने की जगह नहीं है। उसे सिर्फ हुक्म की तामील करना है। यहाँ यह प्रश्न वाजिब है कि क्या सीधे-सीधे बता देने वाले तरीके में शिक्षक के स्वयं के सोचने की गुंजाइश है? शायद नहीं। सोचने की जगह तब होगी जब शिक्षक इन प्रश्नों पर विचार करे-

- बच्चा यह गलती क्यों कर रहा है?
- क्या यह गलती उसके पिछले कक्षा लेखन में भी नज़र आती है?

बारिस का निबंध

Date: / / Page no: 15

बारिस में हम नाचते है

बारिस में पोधो को पानी मिल जाता है

बारिस मे किचड़ होजाती है

बारिस में हरेयाली होजाती है

बारिस मे निदी तालाब भर जाते है

चित्र-2

तोता का निबंध

तोता लाल मिर्च खाता है।

तोता की लाल चुच होती है।

तोता चिड़ियाघर मे होते है।

तोता आसमान मे उड़ते है।

तोता की दो आंखे होती है।

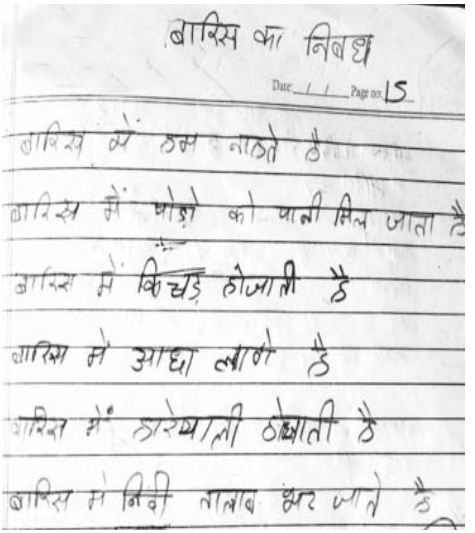

तोता को हम पालते है।

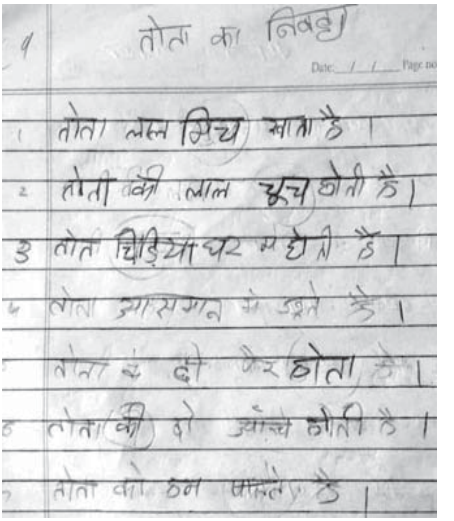

चित्र-3

- सीधे-सीधे यह कहने के कि 'पढ़ताहूँ' में 'पढ़ता' और 'हूँ' के बीच जगह छोड़नी होती है, क्या इसके अलावा भी कोई तरीका हो सकता है?
- क्या हम उसे पेन से चिह्नित करते हुए, तीनों जगह अलग-अलग बताएँगे कि यही सुधार कुल तीन जगह किया जाना है? इस तरह तो हमें हर बार, हर जगह उसे यह बताना पड़ेगा।

एक सुझाव हो सकता है कि पूरी कक्षा के साथ 'एक वाक्य में कितने शब्द हैं' बताने की गतिविधि करवाई जाए। उसमें ऐसे वाक्य लिए जाएँ जिनका अन्त एक ही अक्षर से होता हो। उदाहरण के लिए, 'मुझे चॉकलेट अच्छी लगती है। मैंने तुम्हारी कॉपी ली है। मैं गाड़ी पर बैठता हूँ।' जब बच्चे बताएँगे कि इन वाक्यों में कितने शब्द हैं तो सम्भव है कि यह बच्चा अपनी गलती खुद ही सुधार ले।

क्या सच में बच्चे अपनी गलती दोबारा लिखने में सुधार लेंगे?

मैंने आपको बच्चों की गलतियों को तुरन्त न सुधारने के लिए कुछ तर्क दिए हैं, जैसे 'मिझ' शब्द। तर्क यह है कि बच्चा 'ए' और 'इ' की मात्रा जानता है। यह कक्षा में मैंने करके भी देखा है। कक्षा-3 की एक बच्ची ने 'बारिश' और 'तोता' विषय पर कुछ लाइनें लिखी हैं (देखें चित्र 2 व 3)। उसने दो शब्द क्रमशः 'नदी' को 'निदी' और 'चोंच' को 'चुच' लिखा है। ये लाइनें देखकर मैं जान गई कि यह बच्ची इन शब्दों को लिखना जानती है। मैंने बच्ची से 'तोते की चोंच लाल होती है' और 'बारिश में नदी-तालाब भर जाते हैं' कॉपी के अन्तिम पन्ने पर फिर से लिखने के लिए कहा। चित्र-4 में देखा जा सकता है कि इस बार बच्ची ने सही मात्रा का उपयोग कर लिया है। हाँ, 'चोंच' में बिन्दी लगती है, यह किसी तरह से सिखाना होगा।

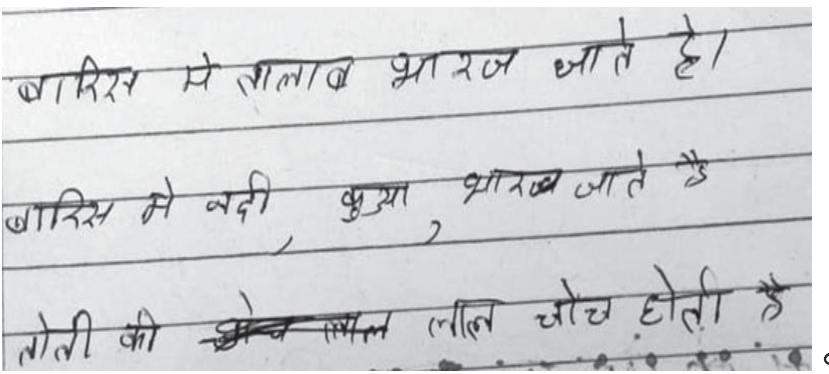

चित्र-4

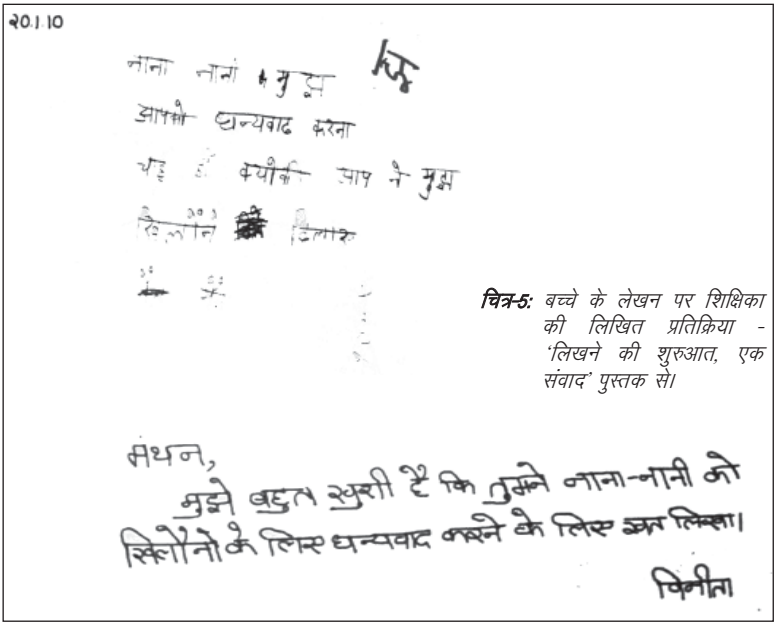

चित्र-5: *बच्चे के लेखन पर शिक्षिका की लिखित प्रतिक्रिया - 'लिखने की शुरुआत, एक संवाद' पुस्तक से।*

लेखन बेहतर करने के कुछ सुझाव

मौलिक लेखन के अवसर देना

यहाँ हमने कक्षा-1 के बच्चे के लेखन का विश्लेषण किया है। कक्षा-1 का बच्चा अपनी बात लिखकर हम तक पहुँचा पाया है, यह एक बड़ी उपलब्धि है। गलतियाँ सुधरवाने का सबसे अच्छा तरीका एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित किताब *लिखने की शुरुआत* सुझाती है। उसमें कहा गया है कि बच्चों को लिखने के ज़्यादा-से-ज़्यादा अवसर दिए जाएँ। शिक्षक बच्चे का लिखा चेक करते वक्त, मन में आए खयालों को लिखते जाएँ। जैसे यदि किसी बच्चे ने अपने पालतू पशु के बारे में कुछ लिखा है तो शिक्षक यह टिप्पणी लिख सकते हैं कि बचपन में उनके पास भी कोई पालतू पशु था और वे किस तरह उसके साथ समय बिताते थे। शिक्षक कोई प्रश्न भी लिख सकते हैं जैसे - तुमने लिखा कि तुम्हारा पालतू कुत्ता गुम हो गया था फिर वो किस तरह मिला, कहाँ मिला। यह तरीका अपनाने से बच्चे लेखन को एक संवाद के तौर पर देख पाएँगे और उत्तर देने के लिए उन्हें लिखने की स्वाभाविक ज़रूरत महसूस होगी जिससे लेखन के अभ्यास का मौका मिलेगा।

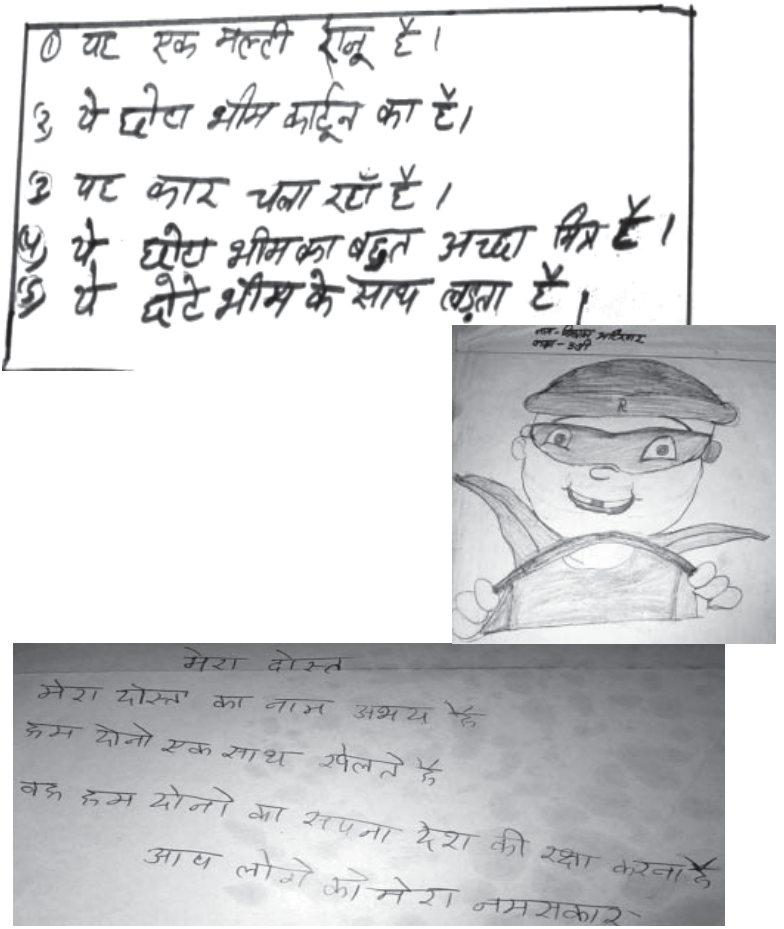

चित्र-6: *एक बच्चे ने अपने पसन्द के कार्टून पर लिखने की कोशिश की है तो दूसरे ने 'मेरा दोस्त' विषय पर लिखने की। इस तरह के लेखन के अवसर बच्चों को और भी ज़्यादा लिखने को प्रेरित कर सकते हैं?*

बाल साहित्य पढ़ने के अवसर (विज़ुअल मेमोरी का विकास)

बच्चों को पढ़ने के लिए ढेरों किताबें उपलब्ध करवाई जाएँ। अक्सर यह समझा जाता है कि जब पढ़ना ही नहीं आता तो कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों को किताबें क्यों दी जाएँ। एन.सी.ई.आर.टी. ने कक्षा पहली

बरखा शृंखला की भूमिका

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'समझ के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। *बरखा* की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। *बरखा* बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थाई पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोज़मर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए *बरखा* की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। इस पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। *बरखा* से पढ़ना सीखने और स्थाई पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों को पाठ्यचर्या के हरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेगा। शिक्षक *बरखा* की किताबों को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी-से उन्हें उठा सकें।

- *बरखा* शृंखला से उद्धरित

और दूसरी के लिए बरखा किताबों की शृंखला बनाई है। इन किताबों को जब बच्चे चित्रों और शिक्षक की सहायता से पढ़ेंगे तो अचेतन स्तर पर बच्चे शब्दों, अक्षरों और मात्राओं की बनावट और इस्तेमाल से परिचित हो रहे होंगे। ज़्यादा पढ़ने से बच्चों की विज़ुअल मेमोरी का विकास होगा। विज़ुअल मेमोरी से मेरा आशय है कि जब आप किसी शब्द को देखकर ही बता देते हैं कि यह गलत लिखा है। कई बार आपको खुद भी पता नहीं होता कि इसमें गड़बड़ कहाँ है पर जब आप उस शब्द को दो-तीन तरह से लिखकर देखते हैं तो आप बता सकते हैं कि उनमें से सही कौन-सा है। कुछ लोग इसे अँग्रेज़ी के सन्दर्भ में ज़्यादा बेहतर तरह से समझ पाएँगे। बच्चे जितना ज़्यादा पढ़ेंगे, जितनी ज़्यादा बातें करेंगे, जितना ज़्यादा लिखेंगे – उनका लेखन उतना ही बेहतर होता जाएगा। ज़रा सोचिए, पहली कक्षा के बच्चे ने 'महापल्ली' और 'कक्षा' जैसे शब्द सही-सही कैसे लिख लिए!

मीनू पालीवाल: अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, सागर, म.प्र. में कार्यरत। इससे पहले आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में काम किया जहाँ समाज और लोगों के कामकाजी जीवन से सम्बन्धित कई सवाल सामने आते थे। उन्हीं सवालों के जवाब ढूँढ़ने की प्रक्रिया में शिक्षा जगत से जुड़ने की प्रेरणा मिली। प्राथमिक कक्षा के बच्चों के साथ काम करने में खास रुचि।

सभी फोटो: मीनू पालीवाल।

इसी विषय पर मीनू पालीवाल का एक लेख *पाठशाला* पत्रिका के अंक-10, दिसम्बर 2021 में प्रकाशित हो चुका है।